VOL- IX | ISSUE- III | MARCH | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

राष्ट्रभाषा हिंदी: कितनी सही,कितनी प्रेरक

शोधनिबंध प्रस्तुतकर्ता
प्रा.बाळासाहेब पंडीतराव पाटील
श्री शिवाजी कनिष्ठ महाविदयालय
कुरुळा ता.कंधार जि.नांदेड

"मैं दुनिया की सब भाषाओंकी इज्जत करता हूँ, पर

मेरे देश

में हिंदी को इज्जत ना हो ये मैं नही सह सकता"।

विनोबा भावे

भाषा राष्ट्र की एकता, अखण्डता तथा प्रगति के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण होती है। कोई भी राष्ट्र बिना एक भाषा के सशक्त व समृध्द नही हो सकता है अत: राष्ट्र भाषा उसे ही बनाया जाता है जो संपूर्ण राष्ट्र मे व्यापक रुप से फैली हुई हो। जो समूचे राष्ट्र में संपर्क भाषा के रुप में कारगर सिध्द हो सके।

भाषा को समाज की संस्कृति का दर्पण कहा जाता है। डॉ. राजेंद्र प्रसाद कहते थे की जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं, वह उन्नत नहीं हो सकता। "राष्ट्र भाषा के बिना देश गूंगा है"। राष्ट्रभाषा वह भाषा होती है जो देश की राष्ट्रीय पहचान का प्रतिक होती है। लेकिन आज भी सभी

भारतवासी दिल और दिमाग से हिंदी को राष्ट्रभाषा के रुप में स्वीकार नही करते है। कमलापती त्रिपाठी ने हिंदी को "भारतीय संस्कृती का आत्मा" कहा है। वास्तव में हिंदी ही भारतवर्ष के लिए राष्ट्रभाषा के रुप में सही और प्रेरक भी है।

स्वतंत्रपूर्व भारत का आठवा हिंदी साहित्य सम्मेलन 29 मार्च 1918 को इंदोर मे महात्मा गांधीजी के अध्यक्षता में संप्पन हुआ था और उस समय गांधीजीने अपने भाषण में पहली बार हिंदी को देश की राष्ट्रभाषा बनाने का आहवान किया था। भारत की संविधान सभा में लंबी बहस के बाद 14 सितंबर 1949 को

यह सहमति हुई की संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरि होगी। तब से प्रत्येक वर्ष इस भाषा के संवर्धन के लिए हिंदी दिवस,हिंदी सप्ताह और हिंदी पखवाडा तक मनाया जाता है। औपचारिकता पूरी करने के लिए सरकारी संस्थानो एवं निजी प्रतिष्ठानों में हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए बैनर लगाए जाते है, संगोष्ठियाँ आयोजित की जाती है, आयोजनो में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए और हिंदी में कामकाज करने का संकल्प किया जाता है। लेकिन यह सब धरा ही रह जाता है। आजादी के 75 सालों के बाद भी हिंदी को राष्ट्रभाषा के रुप में उचित सन्मान नही मिला है।

राष्ट्रभाषा इस अवधारणा की परिभाषाओं को देखे तो हिंदी ही भारतवर्ष के लिए सही राष्ट्रभाषा है। हमारे राष्ट्रपिता गांधीजी ने राष्ट्रभाषा को परिभाषित करते हुये कहा की उस भाषा के द्वारा भारत का आपसी, धार्मिक,आर्थिक और राजनीतिक काम हो सके तथा उसे भारत के जादातर लोग बोलते हो।

गांधीजी की राष्ट्रभाषा की दूसरी परिभाषा को देखिए" राष्ट्रभाषा वही हो सकती है जो सरकारी कर्मचारियों के लिए सहज और सुगम हो। जो धार्मिक,आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में माध्यम भाषा बनने की शक्ती रखती हो, जिसको बोलनेवाला बहुसंख्य समाज हो। इन दोनो परिभाषाओं में वर्णित राष्ट्रभाषा का एक भी लक्षण अंग्रेजी में नही है। हिंदी में ये सारे लक्षण मोजूद है। पी एच मैथ्यूज राष्ट्रभाषा को परिभाषित करते हुए कहते है - "राष्ट्रभाषा वह है जो किसी राष्ट्र की पहचान का स्त्रोत या चिन्ह होती है। इस परिभाषा के संदर्भ में भी हिंदी ही राष्ट्रभाषा के संदर्भ में भी हिंदी ही राष्ट्रभाषा के रुप में सही है। अंग्रेजी भाषा न तो भारत की पहचान का स्त्रोत है और न ही उसका चिन्ह है।

बीसवी सदी में स्वामी दयानंद सरस्वती गुजराती और संस्कृत के विदवान थे, किंतू धर्म प्रचार के लिए उन्होंने

हिंदी को ही माध्यम बनाया। पं मदन मोहन मालवीय कों हिंदी का भगीरथ' कहा जाता है। उन्होंने

हिंदी न्यायालयों की भाषा बने इसके लिए प्रयास किया था। वे हिंदी को राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करना चाहते थे। वे हिंदी को राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करना चाहते थे । महाराष्ट्र के शंकरराव देव, आंध्र की श्रीमती दुर्गाबाई, पं.बंगाल के मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, गुजरात के कन्हैयालाल मानिकलाल मुंशी ये सभी संविधान सभा के सदस्य अहिन्दी भाषी विदवान थे, किंतू इन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा की मान्यता दिलाने के लिए प्रस्ताव का समर्थन किया था। उसी के साथ भारत में धार्मिक सांप्रदाय के प्रमुख प्रचार प्रसार के लिए हिंदी का उपयोग करते है । हिंदी - अहिंदी भाषी विदवानों, संप्रदायो और संघटनों सें हिंदी राष्ट्रभाषा को समर्थन मिला है । अहिंदी प्रांतो के लोग भी सरलता से टूटी फूटी हिंदी बोलकर काम चला लेते है, तो हम सभी भारतवासी दिल से इस तथ्य को स्वीकार कयो न करें ?

भारतीय लोगों की प्रथम दवितीय और तृतीय भाषा कौनसी है इसके बारे में 2011 की जनगणना के दौरान किये गए एक सर्वेक्षण के विश्लेषण से पता चलता है की देश में करीब 70 करोड लोग हिंदी बोलते है या समझते है ।इनते 53 करोड लोगों की सह प्रथम भाषा है। 13 करोड लोगों की यह दवितीय भाषा हिंदी है। 2.5 करोड लोगो के लिए हिंदी तृतीय भाषा है । केवल 2.6 करोड लोगों की अंग्रेजी प्रथम भाषा है 8.3 करोड लोगों की दवितीय भाषा और 4.6 करोड लोगों की तृतीय भाषा अंग्रेजी है । हिंदी और अंग्रेजी की तुलना में अन्य क्षेत्रीय भाषा बोलेनेवाले लोगों की संख्या काफी कम है राजस्थान,दिल्ली,हरीयाणा,उत्तराखंड,उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, और बिहार इन प्रांतो में हिंदी प्रथम भाषा के रुप में बोली जाती है। अंडमान और निकोबार दवीपसमुह, जहाँ लगभग 24 भाषाएँ बोली जाती है, वहाँ हिंदी दूसरी सबसे बडी भाषा है, और पंजाबी,गुजराती, मराठी, और बंगाली इन क्षेत्रीय भाषाओं के साथ- साथ भारत के अनय प्रांतो में भी हिंदी बोली जाती है। बहुसंख्य समाज की भाषा होने से हिंदी को ही राष्ट्रभाषा के रुप में स्वीकार करना उचित होगा।

बीसवी सदीं के अंतिम दो दशकों में विश्व में हिंदी का अंतराष्ट्रीय विकास बहुत तेजी से हुआ है।

अंतरजाल (इंटरनेट) विज्ञापन, संगीत,सिनेमा,और बाजार के क्षेत्र में हिंदी की माँग जिस तेजी बढ रही है वैसी और किसी भाषा में नही। विश्व के लगभग 150 विश्वविदयालयों में तथा सैकडों छोट-बडे केंद्रो में विश्वविदयालय स्तर से लेकर शोध स्तर तक हिंदी के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था हुई है । विदेशों से 40 से अधिक पत्र - पत्रिकाएँ नियमित रुप से हिंदी में प्रकाशित हो रही है। बीबीसी, जर्मनी के डॉयचे वेले, यूएई के हम एफ एम जापान के एनएचके वर्ल्ड और चीन के चाईना रेडियों इंटरनेशनल की हिंदी सेवा विशेष रुप से उल्लेखनीय है।

पाकिस्तान,नेपाल, बांग्लादेश, इन पडोसी देश के लोग भी मानक हिंदी समझ सकते है। फिजी देश के लगभग 48 प्रतिशत निवासी लोग हिंदी बोली बोलते है। जर्मनी में भी हिंदी की लोकप्रियता बढ रही है। जर्मनी के हैडलबर्ग,हम्बोल्ट और बॉन इन विश्वविदयालयों में हिंदी पढाई जा रही है । मालदीव के 80 प्रतिशत हिंदी भाषी लोग बॉलिवुड की फिल्में देखकर ही हिंदी समझने लगे है । अब तक विदेशों में मॉरीशस, त्रिनिडाड, टोबैगो,लंदन, सूरीनाम अमेरिका और जपान में विश्व हिंदी सम्मेलन हुये है । अमेरिका,इंग्लैंड, फ्रांस,जपान ऑस्ट्रेलिया, के पर्यटकों का हिंदी भाषा से विशेष लगाव हो गया है । हिंदुस्तान की संस्कृति और परंपरा को करीब से जानने भारत पहूँच रहे है विदेशी पर्यटक भी हिंदी सिखने के लिए विशेष कक्षाएँ ले रहे है।

डॉ.वेदप्रकाश वैदिक कहते है, " हमारे देश में यह आम धारणा है कि विदेशों में अंग्रेजी ही चलती है अंग्रेजी के बिना हम विदेशो से संपर्क नही रख सकते, अंग्रेजी के जरिये ही मुल्कों ने विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में उन्नति की है। " वे अपने अनुभव से लिखते है कि एशियाई देशों में अफगानिस्तान,ईरान,तुर्की,युरोपिय देशो में रुस, चेकोस्लोवाकिया, इटाली, स्विटरजरलैड, ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस जर्मनी,ब्रिटैन, तथा अमेरिका और कनाडा इन देशों में से एक भी ऐसा देश नही जिसकी सरकार का कामकाज उस देश की जबान में नही होता हो। रुस, जर्मनी और फ्रांस में उँची पढाई उनकी अपनी भाषाओं में होती है। इन देशों के कई विदवान अंग्रेजी नही बोल सकते। यदी कोई विदेशी देश अंग्रेजी के बिना भी तरक्की कर सकते हैं और इन देशों उँची पढाई भी उनकी ही जबान में दी जाती है, तो फिर हम अपनी

तरक्की के लिए और उँची शिक्षा के माध्यम के रुप में हिंदी जो हमारी भाषा है उसे स्वीकार कयो नही करते ?

भारत केा शक्तिशाली और विकसित राष्ट्र बनाने के लिए अंग्रेजी परस्त मानसिकता को छोड हिंदी को ही अपनाना चाहिए। हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे.अब्दूल कलाम की भारतवर्ष को 2020 तक एक शक्तिशाली और विकसित राष्ट्र बनाने की परियोजना अभी 2022 तक भी पूरी नही हो पाई यह तभी सफल होगी जब हम अंग्रेजी भाषा की गुलामी से आजाद होकर हिंदी भाषा को अपनाएंगे। भारत स्वाभिमान यात्रा के दौरान योग गुरु बाबा रामदेवजी ने अपने जनजागृती अभियान में राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रसार की बात कही है।

राष्ट्रभाषा संपूर्ण देश में भावात्मक एवं सांस्कृतिक एकता स्थापित करने का प्रधान साधन होती है. भारत की आखंडता,एकता और राष्ट्रनिर्माण के लिए संपर्क-भाषा और राष्ट्रभाषा के रुप में हिंदी अनिवार्य है।

आचार्य श्री केशवचंद्र सेन लिखते है " अगर हिंदी को भारतवर्ष की एकमात्र भाषा स्वीकार कर लिया जाये तो सहज में ही एकता संपन्न हो सकती है। भूदेव मुखर्जी कहते है कि हिंदी के द्वारा ही पूरे भारत का राजनीतिक ऐकय संभव हो सकता है। स्वतंत्रता संग्राम की भाषा हिंदी थी। नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने यह घोषणा की थी कि हिंदी के विरोध का कोई भी आंदोलन राष्ट्र की प्रगति में बाधक है।

ग्वालियर में एक अनुठा हिंदी माता मंदिर राष्ट्रभाषा प्रेमियों के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। इस मंदीर में वर्णमाला की पुस्तक लिए पृथ्वी और प्रकृति पर विराजमान हिंदी माता की तरह हर दिन भक्तगन दर्शन के लिए आते है। अब नेपाल की राजधानी काठमांडू सहीत देश के अन्य शहरों में भी ऐसे मंदिर बनाने की तैयारी चल रही है। भले ही कोई इसे अंधश्रध्दा कहे पर इससे हिंदी के प्रती सन्मान की भावना अभिव्यक्त होती है।

हिंदी की विशेषता :

- वास्तव में हिंदी विश्व भाषा बनने की पूर्ण अधिकारी है।
- यह केवल भारत की राष्ट्रभाषा ही नही, अपितु संयुक्त राष्ट्रसंघ की भाषा बनने की भी क्षमता रखती हैं।
- संसार की उन्नत भाषाओं में यह सबसे अधिक व्यवस्थित और सबसे अधिक लचीली भाषा है।
- हिंदी एक मात्र ऐसी भाषा है जिसके अधिकतर नियम अपवादविहीन है।
- हिंदी कभी राजाश्रय की मुहताज नहीं रही।
- हिंदी आम जनता से जुडी भाषा है तथा आम जनता हिंदी से जुडी हुई है।
- हिंदी का साहित्य सभी दृष्टियों से समृध्द है।
- हिंदी उदारता की, चरित्र निर्माण और संस्कारों की भाषा है।
- अपनी व्याकरणिक विशेताओं के कारण उच्चारण एंव पढने में हिंदी भाषा जैसी विश्व में कोई भाषा नहीं है।
- हिंदी की भाषागत विशेषता यह है की उसे सीखना और व्यवहार में लाना अन्य भाषाओं की अपेक्षा ज्यादा सुविधाजनक और आसान है।

मैथिलीशरण गुप्त की एक घोषणा जो हिंदी प्रेमियों को प्रेरणा देर्ता है।

है भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि हरी भरी।
हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि है नागरी॥

हिंदी यूँ तो भारत की ही भाषा है, किंतू फिर भी यहाँ इससे सोतेला व्यवहार करना ही सफलता का सुत्र बन गया है। अब यह भाषा माँ की गद्दी से उठाकर मौसी की गद्दी पर विराजित कर दी है।

26 जनवरी 1965 को हिंदी भारत की अधिकारिक भाषा तो बन गई, लेकिन फिर भी यह ससन्मान आम जन की भाषा नही बन पाई। 3 मई 2010 को गृह राज्यमंत्री अजय माकन ने बताया कि देश के संविधान में हिंदी को राष्ट्रभाषा घोषित करने के बारे में कोई प्रावधान नहीं है। हाल ही में गुजरात उच्च न्यायालय ने कहा था की भारत की कोई राष्ट्रभाषा नहीं है और हिंदी अधिकारिक तौर पर राष्ट्रभाषा नहीं है। हिंदी को केवल अधिकारिक भाषा का दर्जा देने से काम नही चलेगा, उसे राष्ट्रभाषा का संविधानिक दर्जा देना ही उचित होगा।

भारत में अंग्रेजी द्वारा हिंदी को विस्थापित करने की बात केवल एक दिवास्वप्न है, क्यों कि भारतीय फिल्मों और कला ने हिंदी को वैश्विक रुप दे दिया है और भारत दुनिया में

सबसे बडा उपभोक्ता बाजार होने के नाते भी विश्व वाणिज्य की सभी संस्थाएं हिंदी के प्रयोग को अपरिहार्य मान रही है। भविष्य में हिंदी के प्रचार प्रसार को कोई रोक नही सकता। हम संसार में श्रेष्ठतम भाषाविज्ञान बोली और परंपराओ वाले है। केवल हीन भाव के कारण हम अपने को और अपनी भाषा हिंदी को देयम समझ रहे है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1) महात्मा गांधी का राष्ट्रभाषा सूत्र
2) संम्पूर्ण गांधी वाड:मय
3) हिंदी पत्रकरिता में राष्ट्रभाषा का स्वरुप - डॉ.माया त्रिपाठी
4) हिंदी की दशा और दिशा - सागरिका
5) वेबदुनिया में प्राप्त जानकारी
6) डॉ.वेदप्रकाश वैदिक का लेख - विदेशों में अंग्रेजी (वेबसाईट)
7) पंकज जोशी का लेख 'हिंदी मौसी नही माँ है (वेबदुनिया)

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com